# खालसा बंदा सिंह बहादुर-राष्ट्रोत्थान के वाहक

& स. गुरचरण सिंह गिल

एक स्थापित मान्यता है कि जो जितना बहादुर होता है, वह उतना ही भावुक व दयावान होता है। रणभूमि में अपनी जान को हथेली पर रखकर दुश्मन को मौत के घाट उतारने वाला वीर, किसी का दुख देख उद्वेलित हुए बिना नहीं रह सकता। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज अपनी दक्षिण यात्रा के समय यह अच्छी तरह समझ रहे थे कि हिरणी के शिकार के बाद उसके पेट से निकले बच्चों को देखकर वैराग्य धारण करने वाले क्षत्रिय, सुदूर जम्मू से गोदावरी के तट पर आकर बसने वाले माधोदास बैरागी के अन्दर एक महान वीर पुरुष छिपा है। आवश्यकता है, उसे सही दिशा देने की। इसीलिए स्वांग रचाना भी आवश्यक था।

दीन दुखियों के कष्ट-निवारण हेतु अवतरित ''अठसठि तीरथ सगल पुन जी दया परवान'' का उपदेश देने वाले गुरु साहब के दशवें स्वरूप गुरु गोबिन्द सिंह आज बकरी के मासूम बच्चों का 'झटका' करने व उनके खून को एक सन्यासी के डेरे में जगह-2 छिड़कने का हुक्म फरमा रहे थे। हिरणी के मासूम बच्चों को बिलखता देख सारी दुनिया, सुख, राज भोग छोड़ने वाले व्यक्ति का मासूम मेमनों का ऐसा अन्त देख आवेग में आना स्वाभाविक ही था।

बैरागी का क्रोध उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था और गुरु जी शान्त-धीर-गम्भीर पलंग पर बिराजे सब देख रहे थे-''गुरुजी बोले, माधोदास क्रोध छोड़ो, बोलो क्या हो गया है।'' माधोदास कड़कर बोलता है कि मासूमों के खून बहने से मेरा डेरा अपवित्र हो गया है गुरुजी बोले, ''संन्यासी, तुझे अपने इस छोटे से डेरे के अपवित्र होने की चिन्ता है, पर वो जो भारतवर्ष का बड़ा डेरा है, उसमें हजारों बेकसूरों का खून बहने का तुझे कोई दुख नहीं है।''

क्रोध थम गया। आवाज रुंध गयी। जैसे एकदम लम्बी तन्द्रा से जागा हो। बस इतना ही बोला पाया-'महाराज...! गुरुजी बोले, ''इस भारतवर्ष के बड़े डेरे में मुगलों द्वारा हजारों बहिनों का सुहाग लूटा जा रहा है, सरेआम उनकी इज्जत लुट रही है, छोटे-छोटे बच्चों को दीवार में चुना जा रहा है। कथा आगे चलती है कि गुरुजी छः मास के लिए एकान्तवास में चले गये। वास्तव में गुरुजी ने बंदा को युद्ध के विभिन्न पक्षों, पंजाब की परिस्थितियों, मुगलों की ताकत, उनकी कमजोरियों, पंजाब की जनता की स्थिति पर गहरा मार्गदर्शन दिया।

अब माधोदास बैरागी अमृतपान कर हाथ में खण्डा लिये 'बंदासिंह बहादुर' हो गया था, जो राष्ट्र के पुनरुत्थान के लिए हुंकार भर पंजाब की ओर कूच करने को तैयार था। उसके पास थे गुरुजी के दिये पांच तीर, पांच सिख-बाबा बिनोद सिंह, बाबा राहनसिंह, बाबा बाजसिंह, बाबा दयासिंह व भाई रणसिंह साथ में नगाड़ा, निशानसिंह, बीरसिंह, गुरुजी के संगतों के लिए हुक्मनाम गुरुजी का दिया ढेर सारा आशीर्वाद व रगों में फड़क रहा क्षत्रिय खून।

**खालसा का पहला पड़ाव**

बंदासिंह बहादुर ने दिल्ली के पास ठहराव कर गुरुजी के हुक्मनामे संगतों को भेजे। हुक्मनामो में बंदासिंह बहादुर को खालसे का जत्थेदार स्थापित करते हुए संगत को धर्मयुद्ध के लिए आह्वान था। संगत अपना घर का समान बेच शस्त्र खरीद, सिर हथेली पर रख, युद्ध के लिए चल दी। जत्थेदार के जत्थे आ रहे थे व खालसा एक फौज के रूप में परिणत हो रहा था। पहला वार 26 नवम्बर, 1709 को समाणे पर हुआ। यहां के सैयद जलालुद्दीन ने गुरु तेगबहादुर जी पर तेग चलाई थी व यहीं के सैयदों ने सरहिन्द में छोटे साहिबजादों को दीवारों में चुने जाने का फतवा जारी किया था। तीन दिन गली-बाजारों में घमासान हुआ और अन्ततः दुष्टों का सफाया हो गया। फौजें आठ दिन समाणा में रुकी, फिर घुड़ाम, ठसका शाहबाज, कुन्जपुरा (वजीरखां का गांव) मुस्ताबाद आदि मुसलमानी जबरजुल्म के अड्डे फतेह किये। इसके बाद बाबा ने घोड़े की वाग कपूरी की ओर की। कपूरी का हाकिम कदमदीन बड़ा ही जालिम, क्रूर व विषय विकारों में लिप्त था। उसने कई हिन्दू महिलाओं को डोली से निकाल कर उनके सतीत्व को भंग किया। उसने कई अय्याशी के अड्डे खोल रखे थे। बाबा जी ने उसके सर को काटकर उसके सारे अड्डों को जलाकर राख कर दिया। वहां सन्ढोरा के हिन्दुओं ने आकर फरियाद की, कि बाबाजी सन्ढोरा के मुसलमान हमें अपने मुर्दों का दाह संस्कार नहीं करने देते, गायों को मारकर घर के दरवाजों पर उनकी आंते गली-रास्तों में डाल जाते हैं। सन्ढ़ोरा का हाकिम उसमान खां था, जिसने पीर बुद्धुशाह को अनेकों कष्ट इसीलिए दिए कि उसने भंगाणी के युद्ध में गुरुजी का साथ दिया था। जो लोग इनके जुल्मों के कारण शहर छोड़कर चले गये थे। वे भी खालसा फौज में आ मिले। सन्ढ़ोरा का फतेह कर उसमान खां व उसके जरनैलों को फांसी पर चढ़ाया गया। महल जला दिये गये पर बुद्धशाह की हवेली को नहीं छेड़ा गया। यह देख कई मुगल सरदार, सैयद व चौधरी उस हेवेली में छिप गया। इसे कहते हैं राष्ट्रोत्थान ! जिन सरदारों के जुलम से सन्ढोरा की हिन्दू जनता शहर छोड़कर भाग गयी थी, वहीं जनता बाबा जी की पीठ पर होने से शेर हो गयी और सारे सरदारों, सैयदों, चौधरियों को कत्ल कर दिया। लेकिन देखिये मर्यादा ! मुसलमान पीरों-फकीरों की जगहों को छोड़ा तक नहीं गया। शाह अब्दुल हमीद

गंजे इल्म और शाह अब्दुल वहाब 'कुतवुल अकताब' की खानगाहे आज तक मौजूद है। मुसलमान फौजों ने तो मंदिरों तक को गिराकर वहां मस्जिदें खड़ी की। मूर्तियों को खण्डित किया, धर्म ग्रंथों को नष्ट किया। इसे ही कहते हैं 'संस्कृति का फर्क' सैनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण किला मुखलिसगढ़ भी फतेह कर लिया गया। अब तैयारी थी सरहन्द पर हमले की ओर इन्तजार था माझा व दुआबा से सिंघों का मालवा नजदीक होने से मालवा के सिख पहले ही आ गये थे। पीछे अंकित युद्धों में उन्होंने ही शिरकत की थी।

खालसा फौज लगभग तीस चालीस हजार एकत्रित हो गयी। उधर वजीद खां ने उत्तर में लाहौर, ऐमनाबाद व दक्षिण के हिसार आदि तक मुसलमान फौजों को इकट्ठा किया था। वजीद खां ने इसे काफिरों खिलाफ जेहाद का नाम दिया। बाबाजी की फौज में तीन श्रेणी के लोग थे। एक तो वे जिन्होंने गुरुजी की चरण छू प्राप्त कर उनके खण्डे बांटे, यछुल (अमृत) धरा था। ये लोग धर्म के दुश्मन व जनता के दोषी-अत्याचारियों के विरुद्ध इसे धर्मयुद्ध मान रहे थे। दूसरी श्रेणी में फूलबंस के रामसिंह व त्रिलोक सिंह आदि द्वारा भेजे गये वेतनभोगी सैनिक थे। तीसरे लूटमार के शैकीन व मौका परस्त लोग थे।

मुकाबला सरहन्द से 20-25 मील दूर चापड़चिड़ी के मैदान में जेठ सुदी चौदह सं. 1767 (12-5-1710) को घमासान युद्ध के रूप में हुआ। पहले दौर में मुगलिया फौजों के हमले व तोपों की गूंज से दूसरी-तीसरी श्रेणी के लोग भाग गए। अब सीधा धर्म यौद्धाओं का मुकाबला -जेहादियों से था। वजीदखां, बाबा बाजसिंह पर आक्रामक हुआ। पास खड़े बाबा फतेहसिंह ने इतनी जोर से तलवार वजीद खां के मारी कि उसके कंधो की ढाल को काटती हुई कमर तक चीरती चली गयी और वजीदखां वहीं ढेर हो गया। सरहिन्द की ईंट से ईंट बजाई गयी। जालिमों का साथ देने वालों के घर-परिवार नष्ट कर दिये।

बाबा बाजसिंह को सरहिन्द का सूबेदार तथा आली सिंह सलौदी को उनका सहायक बनाया गया। भाई फतेह सिंह को सामना का इन्चार्ज व थानेसर का प्रबंध भाई रामसिंह को सौंपा गया। सभी परगनों के शाही कारदारों ने बाबा बंदासिंह बहादुर की ताबेदारी स्वीकार की व इस प्रकार करनाल से लुधियाना तक पहला खालसा राज स्थापित हुआ। इस इलाके की उस समय वार्षिक आमदन 36 लाख रुपये थी।

**राष्ट्र जागरण और खालसा राज**

इस रणभेरी की कथा आगे चलाने से पहले एक चर्चा जरूरी है। कुछ जिज्ञासियों के मन में यह प्रश्न आवेगा कि गुरु गोबिन्द सिंह जी ने तो बंदासिंह बहादुर को पंजाब में से जुल्म खत्म करने के लिए कहा था-यह राज्य स्थापना का नया अध्याय कहां से शुरु हो गया। इसके लिये गुरुजी की वाणी का यही शब्द पर्याप्त हैं:-

**राज बिना नहीं धर्म चले हैं, धरम बिना सभु दले मलै हैं।**

और यह गुरुजी ने भी कोई नयी परम्परा शुरु करने की बात नहीं की थी, बल्कि पहली जोत बाबा नानक का बाबर को जाबर कहकर पुकारना, उसके जुल्म की निन्दा करना व उसे चुनौती देना, इस सदियों से दलित दमित-भ्रमित भारतीय समाज को जगाने के लिये पहली हुंकार थी। गुरु गोबिन्द सिंह जी द्वारा अकाल तख्त साहिब की स्थापना कर आस पास की संगत के छोटे-बड़े विवादों को वहां पर निपटाना और सच्चे पातशाह के रूप में जाना, उसी बीज की अंकुरित पौध थी। गुरु गोबिन्द सिंह जी स्वयं के लिए किसी 'राज' की जरुरत महसूस नहीं करते थे, लेकिन उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि धर्म की रक्षा के लिए राज की स्थापना यानि शक्ति का संगठन यानि राष्ट्र का जागरण अति आवश्यक है।

उन्होंने फरमाया-**कोई किसी को राज न दयि है, जो लयि है निज बल ते लैय है।** यह तो भंगाणी के युद्ध में ही स्पष्ट हो गया था कि यह धर्मयुद्ध भाड़े के सैनिकों से नहीं, बल्कि आत्मोसर्ग को सदैव तत्पर, उच्च जीवन मूल्य धारण किये संत सिपाहियों से ही संभव था। इसीलिए समाज को जागृत करना परम आवश्यक था।

बाबा बंदासिंह बहादुर जी का पंजाब में शासन अल्पकाल तक रहा। दक्षिण से मुगल बहादुरशाह प्रथम सेना लेकर पंजाब आ पहुंचा। मुगल बहादुशाह ने 10 सितम्बर 1710 में यह आदेश दिया कि शासन के खोजदार नानक नामलेवा लोगों की हत्या करें। आदेश में लिखा है-'नानक प्रस्तां रा हर जा कीह बायाबंद बा-काती रसानन्द'। इस दौर में उसका विवाह हो चुका था। अन्ततः लौहगढ़ के किले में भारी संघर्ष हुआ। निरीह जनता को ढाल बनाकर बाबा बंदा सिंह बहादुर जी और सिखों की गिरफ्तारी हुई। खालसा बाबा बंदा सिंह बहादुर को पंजाब से महरौली के रास्ते दिल्ली में प्रवेश कराया गया और जुलूस की शक्ल में उसे एक बड़े पिंजरे में रखा गया। कैद किए गए सिखों का सार्वजनिक प्रदर्शन लालकिले के सामने किया गया। बाबा बंदा सिंह बहादुर को लालकिले में कैद करके रखा गया। उसे बड़ी यातनाएं दी गई लेकिन वह अपने मत पर दृढ़ रहा। उस देश धर्मी योद्धा के मुंह में उसके पुत्रों के अंग काटकर ठूसे गए। बड़ी दर्दनाक और कष्टकारक यातनाओं को भोगते हुए और जेहादियों के समक्ष सिर न झुकाते हुए इस महान यौद्धा ने अपना बलिदान दिया।

आओ ! पुनः चले बाबाजी के खण्डे को हाथों में ले कदम-दर-कदम।●